सूक्ष्म वतन में फरिश्ता स्वरूप में परमात्मा के साथ के तीन संबंध - परमपिता, परमशिक्षक, परमसद्गुरु की गहन अनुभूति

कोई भी आरामदायक अवस्था में बैठ जाइए.... कुछ गहरी गहरी साँस लेते हुए अपने शरीर और मन को शिथिल कर दे.... मन को शांत, स्थिर और एकाग्र कर ले..... अब दृढ़ता पूर्वक धीरे से ये संकल्प करें.....

प्यारे शिवबाबा, आज मैं आपसे वतन में मिलने के लिए आ रही हूँ.... मैं ज्योतिबिंदु आत्मा मेरे बैठे हुए स्थूल शरीर को देख रही हूँ.... और उसके साथ संलग्न मेरे सूक्ष्म शरीर को भी देख रही हूँ..... यह दोनों संलग्न शरीर के मस्तक के केंद्र में मैं, ज्योति बिन्दु स्वरूप, आत्मा बिराजमान हूँ.... जीवात्मा के रूप में मेरा ये त्रिस्तरीय अस्तित्व मेरे सन्मुख है.....अब मैं ज्योति बिंदु आत्मा मेरी डबल लाइट फरिश्ता स्वरूप की अवस्था में स्थित हो रही हूँ..... मेरा सूक्ष्म शरीर धीरे धीरे मेरे स्थूल शरीर से अलग हो रहा है.....मैं ज्योति बिंदु आत्मा मेरे सूक्ष्म शरीर की भृगुटी में विराजमान हूँ..... सूक्ष्म शरीरधारी में आत्मा अब धीरे धीरे ऊपर की ओर जा रही हूँ..... मेरा स्थूल शरीर मेरे पीछे धरती पर छूट गया है.... यह बादल, यह नीला आकाश भी मेरे पीछे छूटता जा रहा है.... अब मैंने अंतरिक्ष में प्रवेश किया है.... मैं फ़रिश्ता सूर्यमंडल के ग्रहों के बीच से गुजरते हुए ऊपर की ओर जा रही हूँ..... सारा पृथ्वीलोक मेरे पीछे छूट गया है.....कितना सुंदर है ये दृश्य.... कितनी आनंददायक है यह सूक्ष्मयात्रा..... समग्र सूर्यमंडल मेरे पीछे छूट गया है.... अनेक तारा मंडल के बीच से, मैं डबल लाइट फरिश्ता तीव्र गति से ऊपर की ओर जा रही हूँ..... समग्र साकारी दुनिया मेरे पीछे छूट गई है..... और अब मैंने सूक्ष्म वतन में प्रवेश किया है.... कितना सुंदर है ये सूक्ष्मवतन!!..... कितना आनंद दायक है यहाँ का बातावरण!!.... कितना सुन्दर दृश्य मैं देख रही हूँ!!..... कितना सुंदर है ये उपवन!!.... एक और पहाड़ो से निकलती हुई, खल खल करती हुई, नदी बह रही है..... कितना निर्मल जल है नदी का!!.....और उस नदी के किनारे पर कितना सुंदर है ये उपवन!!.....सारा उपवन घटाधार वृक्षों से और अनेक पर्णलताओं सुशोभित है..... समग्र वातावरण खुशनुमा है और महक तहा है....

मैं देख रही हूँ कि एक बहुत ही सुंदर, घटाधार वृक्ष के नीचे एक चबूतरा बना हुआ है.... उस चबूतरे पर प्राणप्यारे बाप दादा बैठे हुए है.... बाबा ने मुझे देखा और बाबा मुझे प्यार से कह रहे है, आओ बच्चे..... मैं भी बापदादा के सामने बैठ गई हूँ.... बाबा मुझे प्यारभरी पॉवरफुल दृष्टि दे रहे है..... उस पावरफूल दृष्टि से मैं शक्ति संपन्न हो रही हूँ.....

प्राणेश्वर बाबा, परमपिता के रूप में, आपने मुझे अपना बच्चा बनाया है..... और बहुत ही प्यार से मेरी नित्य पालना कर रहे हो.... मीठे बच्चे, प्यारे बच्चे, लाडले बच्चे कह कर हमें प्यार से बुलाते हो..... हर रोज मुरली के माध्यम से मेरे साथ प्यार से बात करते हो.... मेरी प्यार से पालना करते हो.... परमपिता के पारलौकिक प्यार का मैं गहन अनुभव कर रही हूँ..... जब से ब्रह्माबाबा के तन के माध्यम से बच्चे के रूप में आपने मुझे अडॉप्ट किया है, तब से परमपिता के रूप आपका अलौकिक प्यार और पालना मुझे मिल रही है.... हर रोज अमृतवेले मीठे बच्चे कह कर आप मुझे उठाते हो..... जब जब मैं वतन में आप से मिलन मनाने आती हूँ, तब हर प्रकार से आप मेरी प्यार से पालना करते हो.... गोद में बिठाते हो.... बाहो में समा लेते हो.... प्राण प्यारे बाबा सूक्ष्म वतन की मुलाकात में आप सर्व संबंधों की भी मुंझे अनुभूति कराते हो.... जब बिन्दु रूप अवस्था में आपसे मेरा मिलन परमधाम में होता है, तब भी आप मुझे शांति, शक्ति और पवित्रता से भरपूर कर हमारी पालना करते हो....

प्राणेश्वर बाबा परमशिक्षक के रूप में भी आप मेरी अति स्नेह से पालना कर रहे हो..... नित्य सुबह ज्ञानमुरली सुना कर, हमें शिक्षा दे कर, ज्ञान से उजागर करते हो..... साकार वाणी के माध्यम से आपने मुझे मेरा और आपका स्पष्ट परिचय दिया.... इस विश्व नाटक के आदि मध्य और अंत का विस्तार से ज्ञान दिया..... यह सुव्यवस्थित और संतुलित विश्व नाटक कौन से सिद्धांतों पर चलता है उसका भी ज्ञान दिया..... आपने मुझे ज्ञान का तीसरा नेत्र दे कर त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी बना दिया..... समग्र ब्रह्मांड की भूगोल का ज्ञान दे कर आपने मुझे

तीनों लोक की समझ दी.... आज मैं तीनों लोक में कही भी सहज रूप से आवागमन कर सकती हूँ.... मैं मास्टर त्रिलोकी नाथ होने का अनुभव कर रही हूँ....

प्राणप्यारे बाबा परम सद्गुरु के रूप में भी आप मेरी अलौकिक पालना कर रहे हो..... मैं एहसास कर रही हूँ कि कैसे आपने आकर के, राजयोग सीखा कर के मुझे सभी बंधनों से मुक्त किया..... मैं आत्मा अनेक विषय-विकारों के बंधन में थी..... उन बंधनों से भी बाबा आपने मुझे मुक्त किया..... मुझ आत्मा पर अनेक जन्म के विकर्मों का बोझ था.... उन विकर्मों के बंधन से भी आप मुझे मुक्त कर रहे हो..... अब मैं अपने आप को बहुत ही हल्का महसूस कर रही हूँ..... अनेक आत्माओं के साथ मेरा बहुत ही कड़ा कर्म बंधन था..... उन सभी कर्मबंधनों से भी आपने, सतगुरु के रूप में, मुझे मुक्त किया..... आपने हमें पतित से पावन बनाया..... बाबा आप हमें मुक्ति और जीवनमुक्ति में ले जा रहे हो..... वर्तमान समय भी, ब्राह्मण स्वरूप में, मैं जीवनमुक्ति का एहसास कर रही हूँ..... प्राणेश्वर बाबा, परम पिता के रूप में, परम शिक्षक के रूप में, और परम सद्गुरु के रूप में मेरी प्यार से पालना करने के लिए आपका बहुत बहुत शुक्रिया..... अब मैं आपसे छुट्टी लेकर साकार लोक में आगे का पार्ट बजाने के लिए जा रही हूँ..... ॐ शान्ति..... शान्ति.... शान्ति....